भारत ,श्रीलंका और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF)

चर्चा में क्यों ?

- चीन, जापान और भारत तीनों श्रीलंका के सबसे बड़े द्विपक्षीय लेनदार हैं और श्रीलंका को IMF से $2.9 बिलियन का पैकेज प्राप्त करने के लिए इन देशों के आश्वासन की आवश्यकता होगी।

प्रमुख बिंदु

- भारत द्वारा अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) को वित्तीय आश्वासन भेज दिया गया है। जिससे यह संकटग्रस्त श्रीलंका के ऋण पुनर्गठन कार्यक्रम को आधिकारिक रूप से समर्थन देने वाला श्रीलंका का पहला लेनदार बन गया।
- यह मंजूरी विदेश मंत्री एस. जयशंकर की कोलंबो की निर्धारित यात्रा से कुछ दिन पहले और ठीक उसी समय जारी की गयी, जब श्रीलंका के नेताओं ने चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल के साथ वार्ता समाप्त की।
- भारत के बोर्ड में शामिल होने के साथ, श्रीलंका की IMF सहायता का तेजी से दोहन करने की संभावना अब जापान और चीन के समान आश्वासन पर निर्भर करती है।

श्रीलंका के साथ अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष का कर्मचारी-स्तरीय समझौता

- सितंबर, 2022 में IMF के साथ कर्मचारी स्तर के समझौते के बाद, श्रीलंका द्वारा IMF समर्थन प्राप्त करने पर बल दिया गया। लेनदारों के साथ श्रीलंका की बातचीत में देरी के कारण, चीनी ऋण सुर्खियों में आ गए,जिस कारण स्थानीय राजनेताओं और अंतर्राष्ट्रीय नेताओं दोनों की आलोचना हुई।

श्रीलंका का कर्ज रद्द करने की माँग

- "वर्तमान में,श्रीलंका अर्थव्यवस्था को सही रास्ते पर लाने के लिए काम कर रहा है। अब इसे ऋण पुनर्गठन के लिए भारत और चीन की सहमति लेनी होगी।

स्रोत- द हिन्दू

भारत ने 'चीन के खतरे' का मुकाबला करने हेतु अरुणाचल जलविद्युत परियोजना में 'बफर' योजना बनाई

चर्चा में क्यों ?

- ब्रह्मपुत्र नदी , मीठे पानी के संसाधनों का लगभग 30% और भारत की जलविद्युत क्षमता का 40% हिस्सा कवर करती है।

चिंता का विषय

- **मेडोग**, तिब्बत में चीन की प्रस्तावित 60,000 मेगावाट जलविद्युत पर चिंताएं अरुणाचल प्रदेश के ऊपरी सियांग जिले में प्रस्तावित जलविद्युत परियोजना के डिजाइन को प्रभावित कर रही हैं।
- मेडोग में 60,000 मेगावाट का बाँध भारत से दूर पानी के प्राकृतिक प्रवाह को कम कर सकता है, या "कृत्रिम बाढ़" को ट्रिगर करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है, यह "भारत के लिए चिंता" का विषय है।
- प्रस्तावित परियोजना के डिजाइन में मानसूनी प्रवाह के दौरान 9 बिलियन क्यूबिक मीटर (या लगभग 9 बिलियन टन पानी) का "बफर स्टोरेज" शामिल है, परियोजना एक वर्ष के प्रवाह के पानी के भंडार के रूप में कार्य कर सकती है जो सामान्य रूप से ब्रह्मपुत्र से उपलब्ध होगा या अचानक रिलीज के खिलाफ बफर होगा।

ब्रह्मपुत्र नदी

- ब्रह्मपुत्र नदी को चीन में 'यारलुंग त्संगपो' के नाम से जाना जाता है।
- यह 2,880 किमी. लंबी सीमा पार नदी है जो मानसरोवर झील से निकलती है।

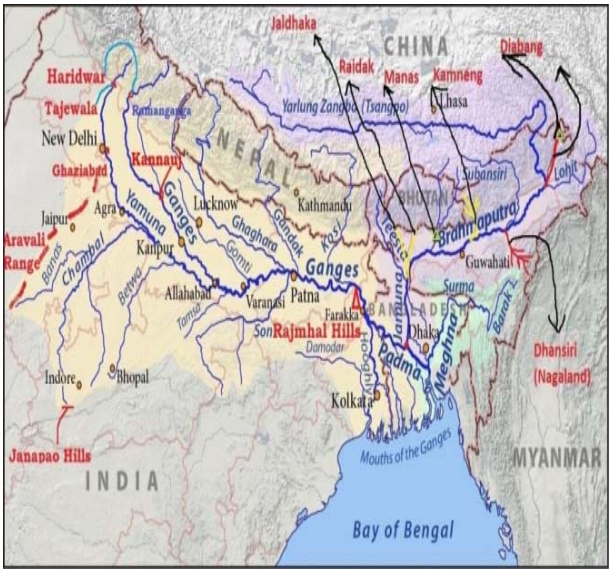

- यह तिब्बत के भीतर 1,700 किमी., अरुणाचल प्रदेश और असम में 920 किमी. और बांग्लादेश में 260 किमी. प्रवाहित होती है। यह मीठे पानी के संसाधनों का लगभग 30% और भारत की जलविद्युत क्षमता का 40% भाग को कवर करती है। इसके प्रवाह को मोड़ने से कृषि प्रभाव असम और अरुणाचल प्रदेश में नीचे की ओर हो सकता है।
- एक स्वतंत्र विशेषज्ञ के अनुसार, असम और अरुणाचल प्रदेश में ब्रह्मपुत्र से बाढ़ को नियंत्रित करने में संभावित रूप से लाभकारी होते हुए भी भारत की जलविद्युत परियोजनाएं चीन के लिए एक रणनीतिक निवारक के रूप में काम नहीं करेंगी।
- "चीन के अनुसार यारलुंग त्संगपो का पूरा हिस्सा रन-ऑफ-द-रिवर प्रोजेक्ट के प्रयोग के लिए है।
- भारत में एक बड़ा बाँध भारत के भीतर बाढ़ को नियंत्रित करने में मदद कर सकता है, लेकिन बांग्लादेश के साथ पानी के बंटवारे पर नए विवाद पैदा कर सकता है। यह अधिक फायदेमंद होगा यदि तीनों देश अधिक पारदर्शी होने और पानी के मौसमी प्रवाह पर जानकारी साझा करने के लिए सहमत हों।

- इस वर्ष के अंत में, NHPC द्वारा 2,000 मेगावाट की **सुबनसिरी लोअर हाइड्रो इलेक्ट्रिक परियोजना** शुरू करने की उम्मीद है। यह भारत में स्थापित अपनी तरह की सबसे बड़ी क्षमता आधारित परियोजना है जो कम से कम चार घंटे में 2,000 मेगावाट बिजली का उत्पादन करने में सक्षम है। इसमें 1,365 मिलियन क्यूबिक मीटर के सकल भंडारण के साथ 160 मीटर ऊँचे बांध का निर्माण शामिल होगा।
- अरुणाचल प्रदेश को लंबे समय से बड़ी जलविद्युत परियोजनाओं के लिए समृद्ध क्षमता वाला राज्य माना जाता है, किन्तु स्थानीय आंदोलन मुख्य रूप से कृषि भूमि, विस्थापन और पर्यावरण संबंधी चिंताओं के कारण कई परियोजनाओं को ठंडे बस्ते में डाल दिया गया है।
- हाल ही में अरुणाचल प्रदेश सरकार ने राज्य में 5 लंबित जलविद्युत परियोजनाओं को केंद्रीय निकायों को सौंपने का फैसला किया। ये मूल रूप से निजी क्षेत्र द्वारा क्रियान्वित की जानी थी, जो नीचे की ओर असम में आंदोलन से बढ़ती लागत के कारण पीछे हट गए।

स्रोत- द हिन्दू

210, Virat Bhawan, 2nd Floor Near Post Office, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09
Contact Us 9999516388, 8595638669

अनिश्चित वर्ष में ग्लोबल साउथ के लिए बैटिंग

चर्चा में क्यों ?

- हाल ही में वॉयस ऑफ साउथ के उद्घाटन सत्र में प्रधानमंत्री द्वारा " दुनिया संकट की स्थिति में है" की ओर इशारा किया गया।

प्रमुख बिंदु

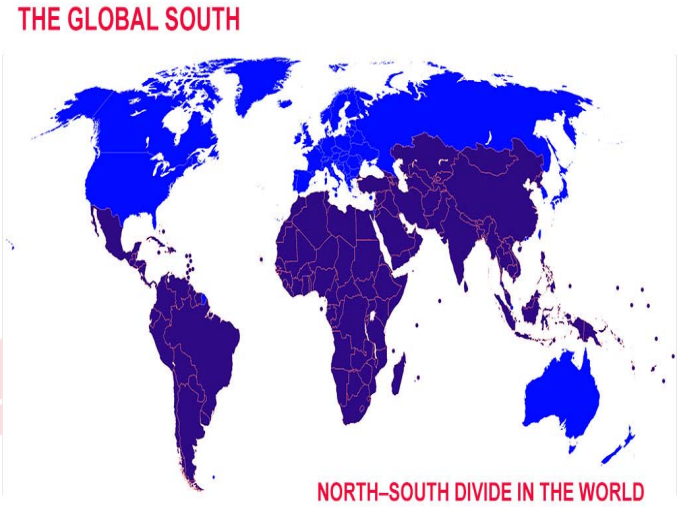

- भारत ने 2023 वर्ष में अपनी G-20 अध्यक्षता शुरू की है। यह स्वाभाविक है कि भारत का उद्देश्य वैश्विक दक्षिण की आवाज को बढ़ाना है।
- **रूस के यूक्रेन युद्ध से सबक:** यदि युद्ध को रूस और यूक्रेन पर छोड़ दिया जाता, तो पूर्व में, सिद्धांत रूप में, एक जीत हासिल होती।

  प्रारंभिक गलत गणनाओं के बावजूद, रूसियों ने युद्ध के शुरुआती महीनों में वृद्धिशील लाभ कमाया। लेकिन जमीनी हकीकत में जो बदलाव आया, वह यूक्रेन को पश्चिमी मदद थी।
- **वुल्फ वारियर कूटनीति**: चीन की सबसे प्रसिद्ध 'वुल्फ वारियर' को दरकिनार कर दिया गया है जो अन्य देशों के लिए खतरा बना हुआ था।
- **तेल सौदा** : चीन इस क्षेत्र में अपने पदचिह्न का विस्तार करना चाहता है, हाल ही में शिनजियांग मध्य एशिया पेट्रोलियम और गैस कंपनी तथा काबुल में तालिबान के बीच बहु-मिलियन डॉलर के सौदे पर हस्ताक्षर अफगानिस्तान-चीन के भविष्य के लिए एक मौलिक परीक्षा हो सकती है ।
- **हारे हुए लोगों का दंगल:** जेयर बोलसोनारो को ब्रासीलिया में जो कुछ हुआ, उसके लिए दोष लेना चाहिए, जो डोनाल्ड ट्रम्प के समर्थकों द्वारा यूएस कैपिटल में 6 जनवरी, 2021 के दंगों की याद दिलाता है, महान मंदी, COVID-19 महामारी मैक्रोइकॉनॉमिक नीतियों की भूमिका आ गयी है ।

पड़ोस की घड़ी

- चीन के साथ भारत का द्विपक्षीय व्यापार 2022 में रिकॉर्ड 135.98 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया, चीनी सीमा शुल्क डेटा चीनी सामानों के भारतीय आयात में वृद्धि से प्रेरित था, यह पिछले वर्ष 21% से अधिक था।

ग्लोबल स्तर पर ग्लोबल साउथ की आवाज के रूप में भारत

- ग्लोबल साउथ, भारत की वर्तमान G-20 प्रेसिडेंसी का एक अहम बिंदु है जिसके तहत भारत ग्लोबल साउथ के मुद्दों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उठाने का लगातार प्रयास कर रहा है।

- भारत के बाद G-20 की अध्यक्षता मैक्सिको और उसके बाद दक्षिण अफ्रीका के पास है और ये दोनों देश ग्लोबल साउथ का हिस्सा हैं। इसलिए भारत अपनी वर्तमान G-20 अध्यक्षता से ग्लोबल साउथ के विकास की पृष्ठभूमि तैयार कर रहा है जो आने वाले समय में ग्लोबल साउथ के दृष्टिकोण को और अधिक मजबूती प्रदान करेगा।

- जैसे-जैसे भारत की अर्थव्यवस्था फली-फूली, वैश्विक भू-राजनीति और भू-अर्थशास्त्र में देश की हिस्सेदारी भी बढ़ी है। आज, दुनिया का रोडमैप तैयार करने के वैश्विक नियमों को सक्रिय रूप से प्रभावित करने में भारत की भूमिका बढ़ गई है।

स्रोत- द हिन्दू

याकुत्स्क शहर

चर्चा में क्यों ?

- हाल ही में रूस के याकुत्स्क शहर को पृथ्वी का सबसे ठंडा शहर माना गया जहाँ साइबेरियाई क्षेत्र में असामान्य रूप से लंबे समय तक ठंड के दौरान तापमान शून्य से 50 डिग्री सेल्सियस (-58 फ़ारेनहाइट) नीचे गिर गया।

याकुत्स्क शहर के बारे में:

- यह रूस के सुदूर पूर्वी साख़ा गणतंत्र की राजधानी है। यह आर्कटिक रेखा से केवल 450Km दक्षिण में स्थित है। यह शहर लेना नदी पर बसा हुआ है और उस पर एक महत्वपूर्ण बंदरगाह है।
- जबकि याकुत्स्क के पास दुनिया के सबसे ठंडे शहर का रिकॉर्ड है, यह तापमान में सबसे अधिक भिन्नता वाला शहर भी है।

परमाफ्रॉस्ट क्या है?

- पर्माफ्रॉस्ट पृथ्वी की सतह पर या उसके नीचे स्थायी रूप से जमी हुई परत है। इसमें मिट्टी, बजरी और रेत होती है, जो आमतौर पर बर्फ से बंधी होती है। Permafrost में तापमान आमतौर पर कम से कम दो साल के लिए 0° C (32°F) या उससे नीचे रहता है। पर्माफ्रॉस्ट ज़मीन पर और समुद्र तल के नीचे पाया जा सकता है।

- पर्माफ्रॉस्ट वाले इलाकों में इमारतों का खड़ा होना काफी कठिन होता है क्योंकि इन इमारतों की गर्मी से पर्माफ्रॉस्ट समय के साथ पिघलता है। इस कारण से या तो इमारत के नीचे गहरे खंबे गाड़कर उसे स्थिर करने की आवश्यकता होती है, फिर नीचे के पर्माफ्रॉस्ट को इमारत की गर्मी से बचाव की ज़रुरत होती है।

स्रोत- टाइम्स ऑफ़ इंडिया

माया सभ्यता

चर्चा में क्यों ?

- हाल ही में, शोधकर्त्ताओं ने उत्तरी ग्वाटेमाला का सर्वेक्षण करते हुए वर्षावन के नीचे दबे एक बड़े माया शहर के खंडहरों की खोज की है।
- अमेरिकी विश्वविद्यालयों के शोधकर्त्ताओं के एक दल ने फ्रांस और ग्वाटेमाला के सहयोगियों द्वारा Lidar (लाइट डिटेक्शन एंड रेंजिंग) का उपयोग करके इसकी खोज की थी।

माया सभ्यता के बारे में

- माया सभ्यता,अमेरिका की प्राचीन सभ्यताओं में सबसे प्रसिद्ध है।
- 2600 ईसा पूर्व के आस-पास **युकाटन प्रायद्वीप** में उत्पन्न, माया सभ्यता वर्तमान में दक्षिणी मैक्सिको, ग्वाटेमाला, उत्तरी बेलीज और पश्चिमी होंडुरास के आस-पास प्रमुखता से प्रसारित हुई।
- माया सभ्यता को विस्तृत और अत्यधिक सजाए गए औपचारिक वास्तुकला के लिए भी जाना जाता है, जिसमें मंदिर-पिरामिड, महल और वेधशालाएं शामिल हैं, जो सभी धातु के औजारों के बिना निर्मित हैं।
- यहाँ के लोग कुशल किसान भी थे, जिन्होंने उष्णकटिबंधीय वर्षा वन के बड़े हिस्से को साफ किया।
- यहाँ भूजल दुर्लभ था, अतः वर्षा जल के भंडारण के लिए बड़े भूमिगत जलाशयों का निर्माण किया गया।

THE STUDY
An Institute

- इन्होंने जंगली अंजीर के पेड़ों की भीतरी छाल से कागज बनाया और इस कागज से बनी किताबों पर अपने चित्रलिपि लिखे। उन पुस्तकों को 'कोडिस' कहा जाता है।

युकाटन प्रायद्वीप कहाँ है?

- युकाटन प्रायद्वीप मेक्सिको का दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र है, जो अटलांटिक महासागर में फैला हुआ है।
- यह मेक्सिको की खाड़ी को उत्तर और पश्चिम में और कैरेबियन सागर को पूर्व में अलग करता है।

मेसोअमेरिका क्या है?

- यह एक भौगोलिक और सांस्कृतिक क्षेत्र को संदर्भित करता है जो मध्य मेक्सिको से नीचे मध्य अमेरिका तक फैला हुआ है, जिसमें भी शामिल देश हैं - ग्वाटेमाला, बेलीज, होंडुरास और अल सल्वाडोर।

Li DAR क्या है?

- एक दूरस्थ संवेदन पद्धति है जो पृथ्वी की रेंज को मापने के लिए स्पंदित लेजर के रूप में प्रकाश का उपयोग करती है।
- ये प्रकाश स्पंदन, वायुवाहित प्रणाली द्वारा रिकॉर्ड किए गए अन्य डेटा के साथ मिलकर पृथ्वी के आकार और इसकी सतह की विशेषताओं के बारे में सटीक, त्रि-आयामी जानकारी उत्पन्न करते हैं।